International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 1, January 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

किराये की कोख का भारतीय नीतिशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण

डॉ.सुमित्रा चारण

व्याख्याता,दर्शनशास्त्र विभाग

राजकीय डूंगर महाविधालय,बीकानेर(राज)

परिचय – प्राचीनकाल से ही सन्तान प्राप्ति को एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि माना गया है और विशेष रूप से हिन्दू संस्कृति में अपने परिवार के अस्तित्व को आगे जारी रखने की चाह को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है।किन्तु नपुंसकता की समस्या इन सभी अवधारणाओं पर रोक लगा देती है। आज नपुंसकता की समस्या इन सभी अवधारणाओं पर रोक लगा देती है। आज नपुंसकता को समाज में एक कलंक के रूप में देखा जाता है। प्राचीन भारतीय इतिहास ऐसी अनेक कहानियों से भरा पड़ा है जिनमें यह दर्शाया गया है कि दम्पत्ति नपुंसकता की इस समस्या से निजात पाने के लिये क्या–क्या उपाय करते थे।

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

हालांकि आज चिकित्सा विज्ञान इतनी तरक्की कर चुका है कि ऐसा कोई भी दम्पत्ति जिसके पास पैसा और समय हो, वह निःसन्तान नहीं रह सकता। ऐसा ही एक उपाय है–सरोगेट मदर।

सरोगेसी का इतिहास – सरोगेट मदर का मुद्दा काफी पुराना है। सर्वप्रथम सन् 1970 में अमेरिका में व्यापारिक तौर पर सरोगेसी की शुरूआत हुई।3 सन् 1986 में सरोगेसी का सबसे चर्चित मामला Baby-M प्रकाश में आया, जिसमें सरोगेट माता ने उत्पन्न हुई बच्ची को उसके जैविक पिता को सौंपने से इन्कार कर दिया।4सन् 1988 में न्यू जर्सी की एक अदालत ने इस चर्चित मामले में बच्ची को उसके जैविक पिता को सौंपने का फैसला दिया और सरोगेट माता को उस बच्ची से मिलने–जुलने का अधिकार दिया।

सन् 2004 में भारत में सरोगेसी का एक ऐसा मामला सामने आया, जिससे बहुत से लोगों को सरोगेसी के बारे में पहली बार पता चला। एक साहसिक निर्णय लेते हुए गुजरात के एक षहर की 47 वर्षीय महिला ने अपनी बेटी के लिये सरोगेट मदर बनकर जुड़वाँ बच्चों को जन्म दिया। सन् 2006 में टीवी कलाकार कैल्सी ग्रामर ने सरोगेट मदर की प्रशंसा करते हुए इसका समर्थन किया।

सरोगेसी की विधि – 'सरोगेट मदर के द्वारा सन्तान प्रसव्त करने के लिये सर्वप्रथम उस सरोगेट मदर का मेडिकल मुआयना किया जाता है कि वह किसी बीमारी से ग्रस्त तो नहीं है। सब कुछ सही होने पर उस दम्पत्ति के शुक्राणु (पुरूष) तथा अण्डाणु (महिला) को प्रयोगशाला में परखनली के भीतर मिलाया जाता है, जो किसी भी कारणवश सन्तान उत्पन्न करने में असक्षम है।

अण्डाणु तथा शुक्राणु के संयोजन से जो भ्रूण बनता है, उसे ऑपरेशन के द्वारा सरोगेट माता के गर्भाशय में स्थापित कर दिया जाता है और गर्भकाल के पूर्ण हो जाने के बाद सरोगेट माता की कोख से सन्तान प्राप्त हो जाती है।

भारतीय नीतिशास्त्र दृष्टिकोण से सरोगेसी का विश्लेषण –सरोगेट मदर की तकनीक के सम्बन्ध में भारतीय दार्शनिक सम्प्रदायों के सम्भावित मत को भी यहा प्रस्तुत किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है।सर्वप्रथम यदि बात की जाये चार्वाक दर्शन के नीतिशास्त्र की तो स्पष्ट है कि सुखवादी चार्वाक उन सभी कार्यो का समर्थन करते है जो कि मनुष्य के सुख में वृद्धि करते है।इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि चार्वाक दर्शन स्पष्ट रूप से सरोगेट मदर की तकनीक का समर्थन ही करेगा क्योकि यह तकनीक निसन्तान दम्पतियों के जीवन में सुख का कारण बनती है।

सरोगेट मदर की तकनीक के सम्बन्ध में जैन नीतिशास्त्र का दृष्टिकोण एक मिश्रित दृष्टिकोण को प्रकट करता है।जैन दर्शन का स्यादवाद यह मानता है कि प्रत्येक दृष्टिकोण आंशिक रूप से ही सही किन्तु सत्य का प्रतिनिधित्व करता है।इस प्रकार स्यादवाद के अनुसार सरोगेट मदर की तकनीक को भी आंशिक रूप से सही एवॅ उचित माना जा सकता है।दूसरी और जैन दर्शन में वर्णित अंहिसा का कठोर स्वरूप सरोगेट मदर की तकनीक का विरोध करता है।जैन दर्शन में वर्णित अहिसा का सिद्धान्त मन,वचन और कर्म से प्रत्येक प्रकार की हिंसा को अनैतिक मानता है जबकि सरोगेट मदर की तकनीक में सरोगेट मदर विभिन्न प्रकार के कष्ट भोगकर जिस सन्तान को उत्पन्न करती है अन्तः में उसे कोई और ले जाता है जिससे उस सरोगेट मदर को जो कष्ट

होता है उसे किसी शारीरिक हिंसा से भी अधिक व्यापक हिसा कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नही होगी।

बौद्ध दर्शन में सरोगेट मदर की तकनीक को मध्यम मार्ग सिद्धान्त के अनुसार स्वीकार्य किया जा सकता है क्योकि मध्यम मार्ग के अनुसार विशेष परिस्थितियों में कुछ ऐसे कृत्यों को भी स्वीकार कर लिया जाता है जिन्हे कि सामान्य परिस्थितियों में स्वीकार नही किया जाता है।

अब यदि न्याय–वैशेषिक दर्शन के अनुसार सरोगेट मदर के विचार की नीतिशास्त्रीय समीक्षा की जाये तो सर्वप्रथम इन दोनों के असत्कार्यवाद सिद्धान्त से इसका समर्थन किया जा सकता है।असत्कार्यवाद के अनुसार कार्य,कारण में निहित नही होते हुए भी उससे उत्पन्न हो सकता है।अर्थात सरोगेट मदर का अंश नही होते हुए भी उससे शिशु के जन्म को स्वीकार करने में कोई आपति व्यक्त नही करनी चाहिए।ठीक इसी प्रकार अदृष्ट के विचार के अनुसार भी सरोगेसी का समर्थन किया जा सकता है।अदृष्ट का विचार यह मानता है कि पूर्व कर्मो का परिणाम हमें अवश्य ही भोगना पडता है।इस सन्दर्भ में यही कहा जा सकता है कि निःसन्तान दम्पतियों के पूर्व कर्मो का ही परिणाम है कि उन्हें सन्तान प्राप्ति हेतु अन्य स्त्री की मदद लेनी पड रही है।किन्तु न्याय–वैशेषिक दर्शन में ईश्वर को जगत का सृष्टा स्वीकार किया गया है और ईश्वर के सृष्टा रूप से सरोगेसी का विचार संगतता नही रखता है।

सांख्य–योग दर्शन के अनुसार यदि सरोगेसी के विचार की प्रांसगिकता की जांच करे तो इनके सत्कार्यवाद के अनुसार तो इसे उचित ही मानना होगा क्योकि जो जिसमें पहले से उपस्थित है वही उससे उत्पन्न हो सकता है?इस प्रकार सरोगेसी से उत्पन्न होने वाली संतान सरोगेट मदर में अस्तित्ववान है

अतः इसे उचित ही मानना चाहिए। यधपि योग दर्शन ईश्वर को स्वीकार करता है अतः ईश्वर को सृष्टा रूप में भी स्वीकार करता है,अतः योग दर्शन के अनुसार सरोगेसी की प्रक्रिया को ईश्वर के कार्य में हस्तक्षेप मानते हुए उसका विरोध ही किया जाता।

न्याय–वैशेषिक की भांति ही मींमासा दर्शन भी अपने अपूर्व के विचार के आधार पर सरोगेसी का समर्थन कर सकता है।अपूर्व के आधार पर निसन्तान दम्पतियों के पूर्व जन्मों के कर्मो का परिणाम ही है कि उन्हे सन्तान प्राप्ति हेतु किसी अन्य महिला की सहायता लेनी पड रही है।

अब यदि अन्त में अद्वैत वेदान्त के अनुसार सरोगसी के विचार की समीक्षा करे तो यह ज्ञात होता है कि अद्वैत वेदान्त में तो केवल मात्र ब्रहम को ही सत्य माना गया है और सम्पूर्ण जगत को मिथ्या तो फिर सरोगेसी भी इस मिथ्या जगत का एक प्रक्रम मात्र ही है।अद्वैत वेदान्त के अनुसार यदि सरोगेसी के लिए उतरदायी कारणों की खोज की जाये तो ज्ञात होगा कि तीन प्रकार के कर्म–प्रारब्ध कर्म,संचित कर्म तथा क्रियमाण कर्म इसके लिए उतरदायी है।

सन्दर्भ ग्रंथ

⑴bharatdiscovery.org/india/agasty

⑵https/ultimategyan.com/pitra-rin-in-hindi

⑶www.wikipedia.org/wiki/surrogacy

⑷peterson,lyer(april 5,1987)baby m future,new York times

⑸weisberg d. Kelly(2005)the birth of surrogacy in israil florida,university of florida press

⑹www.cfr.cam.ac.uk/directory/susan golombok

(7)baby manjhi yamada vs union of india,29 sep 2008,air 369

(8)imrie sosan,jadva,vasanti(4 july 2014)the long term experience of sarogates relationship and contact with sarogacy families in genetic gestational sarogacy arrangements,pp-424-435

(9)https://web law Columbia.edu/Columbia_sexuality_and_

Gender_law_clinic_surrogacy

(10)https://Wikipedia.org/wiki/surrogacy_laws_by_country

(11)brahams d(feb 1987)the hasty british ban on commercial surrogacy

(12)https://Wikipedia.org/wiki/surrogacy_laws_by_country

(13)svitnev k(june2010)legal regulation of assisted reproduction treatment in Russia,repord biomed online(20)892-4

(14)https://Wikipedia.org/wiki/surrogacy_laws_by_country

(15)cooey pail and baby makes five-the senator,his wife and the surrogate mothers,the sydeny morning herald

(16)https://Wikipedia.org/wiki/surrogacy_laws_by_country

(17)nation,lgbtq(7 august 2015)Thailand bans commericial surrogacy for lgbts singles foreigner

(18)https://Wikipedia.org/wiki/surrogacy_law_by_country

(19)https://jemds.com/data_pdf/1_chaturvedi

(20)baby manjhi yamada vs union of india,29 sep 2008,air-369

(21)surrogacylawindia.com/legality.php

(22)www.prsindia.org/billtrack/the-surrogacy-regulation-bill-2016-4470

(23)डॉ. डी.डी.बदिष्ठे / डॉ.रमाशंकर शर्मा,भारतीय दार्शनिक निबन्ध,पृ 6–8

(24)डॉ. वेदप्रकाश वर्मा,नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त,पृष्ठ–348–351